मलिक मुहम्मद जायसी

साहित्यिक परिचय

- जन्म - सन् 1492 ई0 ।
- जन्म स्थान — जायसनगर (उ0 प्र0) ।
- पिता का नाम - शेख ममरेज |
- प्रमुख काव्य ग्रन्थ - पद्मावत अखरावट, अरी कलाम ।
- भाषा - अवधी । शैली - प्रबन्ध |
- शिक्षा - साधु-सन्तों की संगति में वेदान्त, ज्योतिष, दर्शन, रसायन तथा हठयोग का पर्याप्त ज्ञान ।,
- उपलब्धि - हिन्दी सूफी काव्य परंपरा के प्रवर्तक ।
- मृत्यु — सन् 1542 ई0 ।
- साहित्य में स्थान — जायसी सूफी काव्य परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं । इन्होंने अपने काव्य में प्रबन्ध शैली का प्रयोग किया है।

जीवन परिचय : -

मलिक मुहम्मद जायसी जी के जन्म के सम्बन्ध में अनेक मत हैं। इनकी रचनाओं से जो मत उभरकर सामने आता है, उसके अनुसार जायसी का जन्म सन् 1492 ई0 के लगभग गयबरेली जिले के 'जायस' नामक स्थान में हुआ था। वे स्वयं कहते है- 'जायस नगर मोर अस्थानू।'

जायस के निवासी होने के कारण ही ये जायसी कहलाये। 'मलिक' जायसी को वंश-परम्परा से प्राप्त उपाधि थी और इनका नाम केवल मुहम्मद था।

बाल्यकाल में ही जायसी के माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण शिक्षा का कोई उचित प्रबन्ध न हो सका। सात वर्ष की आयु में ही चेचक से इनका एक कान और एक आँख नष्ट हो गयी थी। ये काले और कुरूप तो थे ही, एक बार बादशाह शेरशाह इन्हें देखकर हँसने लगे। तब जायसी ने कहा 'मोहिका हँसेसि कि कोहरहिं?' इस बार बादशाह बहुत लज्जित हुए। जायसी एक गृहस्थ के रूप में भी रहे। इनका विवाह भी हुआ था तथा पुत्र भी थे परन्तु पुत्रों की असामयिक मृत्यु से इनके हृदय में वैराग्य का जन्म हुआ।

इनके चार घनिष्ठ मित्र थे यूसुफ मलिक, सालार कादिम, सलोने मियाँ और बड़े शेख । बाद में जायसी अमेठी में रहने लगे थे और वहीं सन् 1542 ई0 में इनकी मृत्यु हुई थी। कहा जाता है कि जायसी के आशीर्वाद से अमेठी नरेश के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ। तबसे उनका अमेठी के राजवंश में बड़ा सम्मान था प्रचलित है कि जीवन के अन्तिम दिनों में ये अमेठी से कुछ दूर मंगरा नाम के वन में साधना किया करते थे। वहीं किसी के द्वारा शेर की आवाज के धोखे में इन्हें गोली मार देने से इनका देहान्त हो गया। था।

साहित्यिक परिचय :-

'पद्मावत', 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'चित्ररेखा' आदि जायसी की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनमें 'पद्मावत' सर्वोत्कृष्ट है और वही जायसी की

अक्षय कीर्ति का आधार है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इस ग्रन्थ का प्रारम्भ 1520 ई0 में हुआ था और समाप्ति 1540 ई0 में जायसी ने 'पद्मावत' में चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पदमावती की प्रेमकथा का अत्यन्त मार्मिक वर्णन किया है। एक ओर इतिहास और कल्पना के सुन्दर संयोग से यह एक उत्कृष्ट प्रेम गाथा है और दूसरी ओर इसमें आध्यात्मिक प्रेम की भी अत्यन्त भावमयी अभिव्यंजना है। इनकी भाषा अवधी व शैली प्रबन्ध है।

कृतियाँ:-

- पद्मावत,
- अखरावट,
- आख़िरी कलाम,
- कहरनामा,
- चित्ररेखा,
- कान्हावत

उनकी ख्याति का आधार पद्मावत ग्रंथ ही है। इसमें पद्मिनी की प्रेम-कथा का रोचक वर्णन हुआ है। रत्नसेन की पहली पत्नी नागमती के वियोग का अनूठा वर्णन है। इसकी भाषा अवधी है और इसकी रचना-शैली पर आदिकाल के जैन कवियों की दोहा चौपाई पद्धति का प्रभाव पड़ा है।

*****